SHIV SHAKTI

International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)

Vol. 11, No. 3, June 2023 (ISSN 2278 – 5973)

जैन धर्म में मुख्य सिद्धांत और व्यवहार का अध्ययन

ALKA JAIN

RESEARCH SCHOLR OPJS UNIVERSITY CHURU RAJASTHAN

Dr. Digvijay kumarsharma (D. Litt)

Professor and Director

Opjs University Rajasthan Churu

सारांश

जैनधर्मएकप्राचीनभारतीयधर्महैजिसकीआध्यात्मिकताऔरतत्त्वगतविचारधारानेअपनेआदर्शोंऔरमू ल्योंकेसाथमानवताकोप्रेरितकियाहै।जैनधर्मविश्वासकरताहैकिआत्मामुक्तिप्राप्तकरसकतीहैऔरइसके लिएआध्यात्मिकचिंतनकामहत्वपूर्णभूमिकाहोताहै।जैनधर्मकेविभिन्नआचार्योंनेइसआध्यात्मिकचिंत नकोअपनेसमयकीसांस्कृतिक, धार्मिकऔरदार्शनिकपरिप्रेक्ष्यामेंदेखाऔरउसेअपनेविचारोंऔरउपदेशोंकेमाध्यमसेमानवताकेसाथसाझा किया।जैनधर्मनकेवलदुनियाकेसबसेपुरानेजीवितधर्मोंमेंसेएकहै, बल्किइसनेभारतकेसांस्कृतिक, स्थापत्यऔरसाहित्यिकइतिहासमेंभीबहुतयोगदानदियाहै।अनेकधार्मिकविचारएवंविचार, जोआजप्रसिद्धहैं, मूलतःजैनगुरुओंद्वाराफैलायेगयेहैं।जैनधर्ममेंकोईसंस्थापकनहींबल्किकेवलसुधारकहोतेहैं, जोसमयऔरलोगोंकेअनुसारपहलेसेहीपाएगएसत्यकोफिरसेस्थापितकरतेहैं।वर्तमानजैनसाहित्यचौबी सतीर्थंकरोंमेंसेअंतिम, महावीर (लगभग 599-527 ईसापूर्व) सेशुरूहोताहै।जैनधार्मिकदर्शनकीविशिष्टतायहहैकियहअंधविश्वासकोहतोत्साहितकरताहैऔरकिसीके विश्वासकोतर्कसंगतआधारपरस्थापितकरताहै।जैनधर्मअपनेनैतिकताकेसिद्धांतकेलिएदुनियाभरमेंप्र सिद्धहै।

मुख्यशब्द:-जैन धर्म, सिद्धांत और व्यवहार, आध्यात्मिक चिंतन, दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, धार्मिक विचार

प्रस्तावना

धर्म, मानवता की उत्कृष्टता और नैतिकता की मूलभूत आवश्यकता है , जिसमें व्यक्ति और समाज के जीवन की मार्गदर्शन हो। धर्मीकरण के अनेक प्रणालियों में से एक जैन धर्म है, जो अपने विशेष सिद्धांतों और व्यवहारिक प्रथाओं के साथ भारतीय समाज के अद्वितीय हिस्से

के रूप में अपनी विशेष पहचान रखता है। इस अध्ययन का उद्देश्य जैन धर्म के मुख्य सिद्धांतों और व्यवहार के पीछे की गहराई को खोजना और समझना है।

जैन धर्म के मुख्य सिद्धांतों की बात करते समय, उनमें अहिंसा, अनेकांतवाद, और अपरिग्रह के सिद्धांत सबसे महत्वपूर्ण हैं। अहिंसा, यानी अन्याय और हिंसा से दूर रहने का सिद्धांत, जैन धर्म की मूलभूत भावना है। इसके साथ ही, अनेकांतवाद का सिद्धांत व्यक्ति के विचारों की दृढ़ता और समाज में विविधता की समर्थन करता है। अपरिग्रह , यानी सामग्री की अत्यधिक संग्रहण की निषेध, संयम और आत्म-नियंत्रण की भावना को प्रमोट करता है।

व्यवहारिक पहलु की दिशा में , जैन धर्म के समाज में समाहित और शुद्ध जीवन के लिए श्रमण परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान है। ध्यान और तप की प्रथा व्यक्तिगत आत्मा के अध्ययन और पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सेवा का सिद्धांत भी जैन समाज में अन्याय से लड़ने और सहयोग करने की भावना को उत्तेजित करता है।

इस अध्ययन के माध्यम से हम जैन धर्म के सिद्धांत और उनके व्यवहार के प्रति गहराई से समझने का प्रयास करेंगे ताकि हम इस महत्वपूर्ण धार्मिक परंपरा के साथ अधिक परिचित हो सकें और उसके माध्यम से जीवन को आदर्शपर दिशा में आग्रहित कर सकें।

मुख्य सिद्धांत

1 अहिंसा का महत्व:जैन धर्म में अहिंसा को महत्वपूर्ण भावना के रूप में प्रमोट किया जाता है। यहाँ पर हम अहिंसा के सिद्धांत की व्याख्या करेंगे और इसके समाज में प्रभाव को भी देखेंगे।

2 अनेकांतवाद: अद्वितीयता का सिद्धांतजैन धर्म में अनेकांतवाद के सिद्धांत से व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर दृढ़ता आती है। हम इस सिद्धांत के महत्व को समझेंगे और इसके व्यवहारिक पहलुओं की भी जांच करेंगे।

3 अपरिग्रह: उदारता का सिद्धांतअपरिग्रह, यानी अपने पास अधिक सामग्री को न रखने का सिद्धांत, जैन धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हम इस सिद्धांत के पीछे की भावना और समाज में इसके प्रभाव को अन्वेषण करेंगे।

व्यवहारिक पहलु

1.श्रमण परंपरा और साधना :जैन धर्म में साधना का महत्वपूर्ण स्थान है , और श्रमण परंपरा इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम इस परंपरा की उत्थान-पत्थार , उसके साधना तंत्र, और उसके समाज में स्थान की जांच करेंगे।

2.ध्यान और तप:जैन धर्म में ध्यान और तप की महत्वपूर्ण भूमिका है जो आत्मा के शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति में सहायक है। हम इन प्रथाओं के प्रकार , लाभ, और व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं की जांच करेंगे।

3.समाज में सेवा:जैन धर्म में सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका उदाहरण भगवान महावीर के जीवन से मिलता है। हम इस सेवा के सिद्धांत की व्याख्या करेंगे और उसके समाज में प्रभाव को देखेंगे।

नैतिकता

नैतिकता (सार्वभौमिक) सही और गलत के बीच चेतना की आंतरिक पसंद है। जिसमें से वह शुद्ध या कम संक्रमित अवस्था में स्वाभाविक रूप से सार्वभौमिक अधिकार को चुनता है।

नैतिकता की परिभाषा है - 'नैतिक सिद्धांत जो किसी व्यक्ति के व्यवहार या किसी गतिविधि के संचालन को नियंत्रित करते हैं। '1 वे सिद्धांत जो भीतर से शुरू होते हैं और मनुष्य को नैतिक व्यवहार के शिखर तक ले जाते हैं। जैन दर्शन में अन्य सभी चीजों (जैसे पदार्थ, कर्म आदि) की तरह नैतिकता का भी सूक्ष्मता से, मूल तक वर्णन किया गया है। यहां किसी के मन में उत्पन्न होने वाले प्रत्येक विचार , उसके द्वारा बोले गए प्रत्येक शब्द और

उसके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य की जांच की जानी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की हिंसा से बचा जा सके और प्रकृति , ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सके। एक संत के लिए ये अभ्यास सबसे कठिन होते हैं और इसलिए इन्हें महाव्रत (महान व्रत) कहा जाता है, जबकि एक आम आदमी के लिए ये तुलनात्मक रूप से आसान होते हैं और अणुव्रत (छोटे व्रत) कहलाते हैं।

जैन दर्शन की विशिष्टता यह है कि यहां भावनाओं को भी आंतरिक संपत्ति माना जाता है। चौदह आंतरिक संपत्तियाँ हैं - मिथ्यात्व (झूठ) , क्रोध (क्रोध), मन (गर्व), माया (भ्रम), लोभ (लालच), हास्य (हँसी), रति (मैथुन), आरती (संयम), शोक (शोक)।), भय (भय), जुगुप्सा (घृणा), स्ट्रिवेडा (महिला लिंग), पुरुषवेद (पुरुष लिंग), और नपुंसक वेद (नपुंसक लिंग)। और इसलिए उन्हें नियंत्रित करना नैतिकता का एक सहज हिस्सा है क्योंकि अनियंत्रित भावनाएं अनियंत्रित हिंसा को जन्म देती हैं। अदम्य आंतरिक संपत्ति असीमित भौतिक संपत्ति की ओर ले जाती है।

'जैन धर्म में कई अन्य मामलों की तरह , नैतिकता सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत जिम्मेदारी का मामला है। '1 जहां व्यक्ति स्वयं के अलावा किसी और के प्रति जवाबदेह नहीं है। यहाँ तक कि परिवार , समाज और राष्ट्र भी क्रमशः बाद में आते हैं। 'व्यक्तिगत जिम्मेदारी की एक मजबूत भावना जो हर किसी को सचेत रूप से अपने कार्यों और दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए मजबूर करती है , वह प्रत्येक व्यक्ति को आधुनिक मीडिया द्वारा दैनिक दुष्प्रचार और विभिन्न प्रकार के भ्रमित करने वाले प्रचार से भी बचाती है, जो एक स्वस्थ, लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण समाज के लिए फायदेमंद है। .2 विशेष रूप से आज की दुनिया में जब कोई व्यक्ति अपने आहार के संदर्भ में भी निरंतर प्रभाव में रहता है, जैन नैतिकता उसे प्रत्येक मामले में अपने स्वयं के विचार और विकल्प रखने के लिए लगातार प्रेरित करती है।

कर्म दर्शन

यह विचार कि वहाँ कोई उच्चतर व्यक्ति विशाल रिकॉर्ड बुक के साथ बैठा है , हम सभी के कर्मों पर नज़र रख रहा है , प्रत्येक मानस को भ्रमित करता है। किसी भी मामले में , जब किसी को यह स्वीकार हो जाता है कि ब्रह्मांड में ऐसा करने वाला कोई नहीं है , तो कर्म परिकल्पना एक के बाद एक पन्ने खुलने लगती है। कर्म को गहराई से समझने का तात्पर्य केवल अपनी गतिविधियों की कुल देनदारी को मानना है ; किसी आविष्कृत प्रमुख सत्ता से किसी बाधा के बिना और शानदार ढंग से यह फिर भी अवसर है। किस विधि से कर्म अधिक महत्वपूर्ण स्थिति प्राधिकारी द्वारा दिए गए किसी व्यक्ति की गतिविधियों का परिणाम बन सकेगा? कोई भी व्यक्ति, चाहे वह भगवान ही क्यों न हो, ऐसा क्यों करेगा? किस कारण से वह किसी अन्य व्यक्ति के कर्म का पता लगाने में अपनी बहुत सारी ऊर्जा निवेश करेगा ? प्रत्येक प्राणी के अतीत, वर्तमान और भविष्य के कर्मों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किसी को कितने प्रतिनिधि रखने की आवश्यकता है ? कौन चुनता है कि किसी के हर अच्छे और बुरे काम पर कौन सा जैविक उत्पाद दिया जाए ? जब कोई विशिष्ट कर्म करता है तो क्या योजना, बल और परिस्थितियों के बारे में कुछ नहीं कहा जाना चाहिए ? विभिन्न प्रकार के कर्म हो सकते हैं, कुछ को कम समय में फल मिल सकता है और दूसरे को प्राप्ति के लिए लंबे समय तक प्रयास करना पड़ सकता है; यह निष्कर्ष कौन निकालता है कि किसी को कब और कितनी राशि देनी है? 'जब कोई सेब को पकड़ता है और बाद में सेब को छोड़ देता है , तो सेब गिर जाएगा: यह प्राकृतिक के अलावा और कुछ नहीं है। यहां कोई न्यायाधीश नहीं है, और किसी नैतिक निर्णय की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह शारीरिक गतिविधि का एक यांत्रिक परिणाम है। जैन धर्म सिखाता है कि इसी तरह से परिणाम तब होते हैं जब कोई झूठ बोलता है , कुछ लेता है , मूर्खतापूर्ण क्रूरता का प्रदर्शन करता है या व्यभिचारी जीवन जीता है। किसी जज की आवश्यकता नहीं है. यह स्वीकार करने के बजाय कि नैतिक पुरस्कार और प्रतिशोध एक स्वर्गीय न्यायाधीश द्वारा तैयार किए जाते हैं, जैनियों का मानना

है कि ब्रह्मांड में एक जन्मजात नैतिक व्यवस्था है , जो कर्म के कार्यों के माध्यम से स्वचालित है।'

कर्म बंधन के कारण और पहलू

अक्सर हम कहते हैं कि किसी के जीवन में दुखद समय आने पर भी अधिक खुशी के अवसर आते हैं। इस घटना में कि हम कर्म के निर्धारण में समानता पर विचार करते हैं, दुख (या पीड़ा) भारी कर्म कणों को दर्शाता है जबकि आनंद कर्म के हल्के भार को दर्शाता है। 'खुशी का सामान्य अर्थ यह है कि कर्म का विचलन हो गया है और आत्मा का स्वाभाविक आनंद अधिक उल्लेखनीय स्तर तक अनुभव किया गया है , जबकि पीड़ा का उलटा अर्थ है: कि कर्म प्रभाव में विस्तार के माध्यम से स्वयं के साथ स्वयं की पहचान टूट गई है विस्तारित, जो कि संसार में स्वयं के बंधन में अंतर्निहित मूल दोष है , बार-बार पुनरुत्थान का चक्र।' इस प्रकार हम अपने वातावरण में कई व्यक्तियों को अपने भयानक अवसरों में यह कहते हुए देख सकते हैं, "कौन पहचानता है कि पापा (घृणित) मैंने क्या किया अतीत में क्या मुझे आज इसके नीचे टिके रहने की ज़रूरत है?"

'बंधन के चार पहलू हैं: प्रकार , अवधि, फल की तीव्रता (गुणवत्ता), और आत्मसात किए गए भौतिक कणों का द्रव्यमान। ' कर्म का परिणाम किसी श्रेष्ठ , दैवीय शक्ति द्वारा दिया गया कुछ नहीं है बल्कि प्राकृतिक है।

निष्कर्ष

जैन धर्म एक अद्वितीय धार्मिक परंपरा है जो अहिंसा , अनेकांतवाद, और अपरिग्रह के सिद्धांतों पर आधारित है। यह धर्म व्यक्ति के आत्मा के शुद्धि और समाज में सद्गुणों की अधिकता की प्रेरणा प्रदान करता है।अहिंसा , जैन धर्म के मुख्य सिद्धांतों में से एक है , जिसका मतलब है किसी भी प्राणी के प्रति अन्याय और हिंसा की प्रतिक्रिया न करना। यह

विश्वास किया जाता है कि सभी जीवों का आत्मा एक समान है और हर जीव की महत्वपूर्णता है। यह सिद्धांत उच्चतम मानवता के मार्गदर्शन करता है और समाज में सद्गुणों की बढ़ती समर्थना करता है।अनेकांतवाद, एक और बहुतांत के अस्तित्व को स्वीकार करने वाला सिद्धांत है, यह व्यक्ति के विचारों की सामंजस्यिकता को प्रमोट करता है और तर्किकता के द्वारा सत्य की पहचान करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसका परिणामस्वरूप व्यक्ति और समाज में सहमति की भावना और समर्थना को बढ़ावा मिलता है।

अपरिग्रह, सामग्री की अत्यधिक संग्रहण की निषेध करता है , जिससे व्यक्ति और समाज में संयम और आत्म-नियंत्रण की भावना बढ़ती है। यह सिद्धांत उदारता की भावना को प्रोत्साहित करता है और समाज में सामाजिक समृद्धि को सुनिश्चित करने में मदद करता है।जैन धर्म के व्यवहार में श्रमण परंपरा , ध्यान, तप, और सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रमण परंपरा ने आत्मा की शुद्धि और समाज में शांति की प्राप्ति के लिए समाहित जीवन के माध्यम से मानवता को मार्गदर्शन किया है। ध्यान और तप के साधना मार्ग से आत्मा का आदर्श स्वरूप प्राप्त होता है , जो जीवन को सच्चाई और निष्कलंकता की दिशा में आग्रहित करता है। सेवा के सिद्धांत नेजीवन को समरसता और सहयोग की भावना से युक्त किया है, जो समाज में उच्च मूल्यों की स्थापना करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमीश. मेलुहा के अमर. तारा प्रेस. नई दिल्ली। 2010.

2. अमीश. नागाओं का रहस्य. वेस्टलैंड लिमिटेड चेन्नई। 2011.

3. बरवलिया गुणवंत (संपादक)। भारत और विदेश में जैन धर्म का विकास और प्रभाव। अरहम आध्यात्मिक केंद्र का सौराष्ट्र केसरी प्राणगुरु जैन दार्शनिक एवं साहित्यिक अनुसंधान केंद्र। मुंबई। 2013.

4. बेसेंट एनी. जैन धर्म. थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस। अड्यार. चेन्नई. भारत। 2005.

5. भंडारी नरेंद्र डॉ. जैन धर्म: आत्मज्ञान का शाश्वत और सार्वभौमिक मार्ग (एक वैज्ञानिक संश्लेषण)। प्राकृत भारती अकादमी। जयपुर. 2015.

6. चटर्जी ए.के. जैन धर्म का एक व्यापक इतिहास (खंड-2) (पीडीएफ)। फ़िरमा केएलएम प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता। प्रथम संस्करण 1984.

7. डागा तारा डॉ. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा। प्राकृत भारती अकादमी। जयपुर और श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ। मेवानगर। पहला संस्करण: 2006.

8. डेविड्स राइस मिसेज द बर्थ ऑफ इंडियन साइकोलॉजी एंड इट्स डेवलपमेंट इन बुद्धिज्म (पीडीएफ)। लुज़ैक एंड कंपनी लंदन। 1936.

9. डंडास पॉल. जैन. रूटलेज। ऑक्सन। यू.के. दूसरा संस्करण: 2002।

10. आइंस्टीन अल्बर्ट. सापेक्षता (विशेष और सामान्य सिद्धांत)। सामान्य प्रेस. दरियागंज. नई दिल्ली। 2017.

11. फर्ग्यूसन किट्टी। स्टीफन हॉकिंग: उनका जीवन और कार्य। ट्रांसवर्ल्ड पब्लिशर्स। लंडन। 2011.

12. फ्लुगेल पीटर (संपादक)। जैन अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. खण्ड 4- 6. हिन्दी ग्रन्थ कार्यालय। 2008-2010.